



आर्य मित्र



साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००

वार्षिक शुल्क ₹ १००

(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२२ ● अंक : ४१ ● ७ नवम्बर २०१७ कार्तिक शुक्ल पक्ष चतुर्थी संवत् २०७४ ● दयानन्दाब्द १६३ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११८

उत्तराखण्ड मुख्यमंत्री जी से भेंट-

पूरे प्रदेश में शराब बन्दी की माँग हेतु मिला शिष्ट मण्डल

विधान भवन के निकट सेतु का नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती सेतु के नामकरण एवं आर्य समाज भवाली की हुई सुरक्षा की घोषणा



में ऋषि दयानन्द हरिद्वार के कुम्भ मेले से देहरादून पहुँचे थे। देहरादून के वर्तमान विधान सभा चौक वा रिस्पना सेतु पर देहरादून के आर्यों ने सम्मानपूर्वक उनकी अगवानी की थी। आर्यसमाज ने मांग की कि इस स्थान का नाम महर्षि दयानन्द चौक कर दिया जाये।



आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली, एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ०ख०, का ४० सदस्यी मण्डल सर्वदेशिक सभा दिल्ली के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश तथा आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० के यशस्वी प्रधान डॉ० धीरज सिंह, एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ०ख० के प्रधान गोविन्द सिंह भण्डारी के नेतृत्व में उ०ख० प्रदेश की राजधानी देहरादून स्थित सचिवालय में मुख्यमंत्री श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत जी से मिला और उनका स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया। मुख्यमंत्री जी को आर्यसमाज की ओर से एक ज्ञापन व मांगपत्र भी प्रस्तुत किया गया। प्रतिनिधि मण्डल में आर्य प्रतिनिधि सभा, प्रदेश के अनेक स्थानों से आर्यसमाजों के अधिकारी एवं प्रतिनिधि भी सम्मिलित हुए।

मुख्यमंत्री श्री त्रिवेन्द्रसिंह रावत जी का स्वागत एवं अभिनन्दन आर्यसमाज के सभी नेताओं एवं प्रतिनिधियों ने उन्हें ओ३म् का पट्टा व शाल ओढ़ाकर, ऋषि दयानन्द का चित्र भेंट किया व सत्यार्थप्रकाश सहित आर्यसमाज का साहित्य भेंट किया। ऐसा करते हुए स्वस्तिवाचन के मंत्रों का तीव्र स्वर से पाठ भी किया। उन्होंने आर्य समाज की कुछ मांगों को भी संक्षेप में उल्लेख किया व मांग पत्र पढ़कर उसे बाद में उन्हें सौंप दिया। मुख्य मांग यह थी कि सन् १८७६

दूसरी मांग थी कि उत्तराखण्ड के नैनीताल जिले के भवाली आर्य समाज की ६० वर्ष की लीज ३१.३.२०१६ को समाप्त हो गई है। इसको फ्री होल्ड कराने में समस्याएँ आ रही थी। इसके लिए आर्यसमाज ने मुख्यमंत्री जी को शुल्क में छूट देने व उसे न्यूनतम शुल्क पर आर्यसमाज को स्थाई रूप से देने की मांग की थी। मुख्यमंत्री जी से तीसरी मांग प्रदेश में पूर्ण नशाबन्दी लागू करने की थी जिससे युवा व अन्य लोगों के जीवन को स्वस्थ व सुखी बनाया जा सके और परिवार पर होने वाले दुष्प्रभावों को रोका जा सके। मुख्यमंत्री जी ने अपने सम्बोधन में आर्यसमाज के प्रतिनिधि मण्डल का उनका अभिनन्दन किये जाने के लिए धन्यवाद किया। उन्होंने आर्यसमाज की प्रथम मांग का उल्लेख कर कहा कि जहाँ ऋषि दयानन्द आये थे वह चौक विधानसभा चौक के नाम से प्रसिद्ध है। वह इसका नाम बदल भी देंगे तब भी, पुराने अनुभव के अनुसार, लोग इसे पुराने नाम से पुकारेंगे। उन्होंने स्वयं सुझाव दिया कि इस चौक से जुड़ा हुआ ही रिस्पना नदी का जो विशाल सेतु है उसका नाम वह 'महर्षि दयानन्द सेतु' करा देंगे और शीघ्र ही इससे सम्बन्धित आदेश जारी हो जायेंगे। भवाली आर्यसमाज की समस्याओं के प्रति भी उन्होंने पूर्ण सहानुभूति प्रदर्शित की और

पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। आर्यसमाज के अतीत के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और कहा कि देश को स्वतन्त्रता दिलाने में आर्यसमाज की प्रमुख भूमिका व योगदान है। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द ने कहा था कि वेद भारत के लिए हैं और भारत वेद के लिए है। उन्होंने कहा कि "भारत भारतीयों के लिए" शब्दों का भी उद्घोष भी सबसे पहले उन्होंने ही किया था। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि आर्यसमाज की स्थापना के बहुत बाद कांग्रेस की स्थापना हुई थी परन्तु आरम्भ के वर्षों में उन्होंने देश की आजादी की बात नहीं की थी। वह तो आरम्भ में अंग्रेजों के सहयोगी रहे। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज से संबंधित पुस्तकें उन्होंने पढ़ी हैं और उन्हें इन तथ्यों का ज्ञान है। उनके शब्द यह भी थे कि 'महर्षि दयानन्द ने सबसे पहले आजादी का बिगुल बजाया था।' मुख्यमंत्री जी ने कहा कि भवाली आर्यसमाज की लीज बढ़ाने में कोई दिक्कत नहीं है। उसे कर दिया जायेगा। नशाबन्दी की आर्यसमाज की मांग की चर्चा कर उन्होंने कहा कि विवाहों के अवसरों पर

शेष पृष्ठ ७ पर



डॉ. धीरज सिंह

प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....



सफलता का प्रथम सोपान है पुरुषार्थ

प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि वह अपने जीवन में सफलता की ऊँचाइयों को प्राप्त करे। वह उस बुलंदी के चरम तक पहुँचना चाहता है जहाँ उसको सब आसान लगे। सफलता की चाह प्रत्येक को होती है वह उसी में दिन-रात लगा रहता है। कुछ लोग इसमें सफल भी हो जाते हैं और कुछ हार भी जाते हैं। सफलता का मार्ग संघर्षों की कड़ी चट्टानों के बीच से होकर गुजरता है। वही व्यक्ति सफल होता है जो संघर्षों की कहानी को अपना जीवन बना लेता है। या ये कहे कि जो संघर्षों की आग में तपना जानता है वही सफल होता है। हम सब चाहते हैं कि हमें जीवन के हर संघर्ष में सफलता हासिल हो। हम जो भी सपना देखें वह हर हाल में पूरा हो जाए। प्रत्येक व्यक्ति सपनों की दुनिया में खोकर उसे पूरा करने का प्रयास करने में हमें अपना सौ प्रतिशत लगन लगा देनी चाहिए तभी हम सफल हो सकते हैं।

सभी कहते हैं कि सफलता के लिए संघर्ष की आवश्यकता होती है उसके बगैर आप सफल नहीं हो सकते यह बात सच है लेकिन संघर्ष की कोई परिभाषा है या नहीं यह सब को परेशान करती है। संघर्ष की यह परिभाषा है आप अपने चारों ओर की दुनियादारी को बिल्कुल ही त्याग दें और एक कमरे में बन्द हो जाए: सफलता के लिए हमें कई चीजों की आवश्यकता पड़ती है उन सभी के बीच तालमेल और सामन्जस्य को बनाने में जो प्रयत्न करना पड़ता वह संघर्ष है। मानव हो या विद्यार्थी जीवन अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विषय परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। विषम से विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए अपने सपने को पूरा करने के प्रयास को ही संघर्ष कहते हैं।

युद्ध में घायल सैनिक द्वारा विजय की आशा ही उसको जीने की लालसा ही साहस प्रदान करती है। वह अपने प्राणों की परवाह किये बगैर जीतने की कामना करता है क्योंकि उसने युद्ध में जीतने का स्वप्न देखता है वह सैनिक उस सपने को पूरा करने का प्रयास करता है। यदि वह सैनिक गोलियों की तड़ितझाहट से घबरा कर युद्ध से भाग जाए तो क्या वह कभी अपने स्वप्न को पूरा कर सकता है कभी नहीं उसे मरकर भी अपने स्वप्न को पूरा करना है इसलिए वह युद्ध में जीने का संघर्ष करता है। मैं ये नहीं कहता कि युद्ध में जीतना ही संघर्ष की कहानी है। मानव के हर स्वप्न के लिए उसे युद्ध लड़ना पड़ता है। लेकिन संघर्ष तो उसे भी करना पड़ता है कभी आर्थिक हालात से कभी समाज से तो कभी अनेक परेशानियों से। जो इन सब को अपनी सही रणनीति और कार्यकुशलता से अनुकूल बना लेता है। वही विजयी हो जाता है वही कहाता है विजेता। हमेशा ध्यान रखना, यह दुनिया विजय को देखती है संघर्ष को नहीं, संघर्ष को वही देखता है जिसने संघर्ष किया है उसे जिया है। इसीलिए संघर्ष ही सफलता की प्रथम सीढ़ी जितना संघर्ष उतनी बड़ी सफलता आपको मिले। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि आप सभी को संघर्षों के साथ जीने की कलाओं में कभी भी विषम परिस्थिति में ना घबरायें आगे बढ़ते रहे, यही शुभ मंगल कामना है। संघर्ष पर अपना सपना पूरा करो।

— सम्पादक

गतांक से आगे

सत्यार्थ प्रकाश

अथ चतुर्थ समुल्लासारम्भः

अथ समावर्तनविवाहगृहाश्रमविधिं वक्ष्यामः

जो कुछ पाकशाला में भोजनार्थ सिद्ध हो, उस का दिव्य गुणों के अर्थ उसी पकाग्नि में निम्नलिखित मन्त्रों से विधिपूर्वक होम नित्य करें।

होम के मन्त्र

ओम् अग्नये स्वाहा। सोमाय स्वाहा। अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा। विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। धन्वन्तरये स्वाहा। कुह्वे स्वाहा। अनुमत्यै स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। सह द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा। स्विष्टकृते स्वाहा।

इन प्रत्येक मन्त्रों से एक-एक बार आहुति प्रज्वलित अग्नि में छोड़े। पश्चात् थाली अथवा भूमि में पत्ता रख के पूर्व दिशादि क्रमानुसार यथाक्रम इन मन्त्रों से भाग रक्खे—

ओं सानुगायेन्द्राय नमः। सानुगाय यमाय नमः। सानुगाय वरुणाय नमः। सानुगाय सोमाय नमः। मरुद्भ्यो नमः। अद्भ्यो नमः। वनस्पतिभ्यो नमः। श्रियै नमः। भद्रकाल्यै नमः। ब्रह्मपतये नमः। वास्तुपये नमः। विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। दिवाचरेभ्यो भूतेभ्यो नमः। नक्तञ्चारिभ्यो भूतेभ्यो नमः। सर्वात्मभूतये नमः।।

इन भागों को जो कोई अतिथि हो तो उस को जिमा देवे अथवा अग्नि में छोड़ देवे। इनके अनन्तर लवणान्न अर्थात् दाल, भात, शाक, रोटी आदि लेकर छः भाग भूमि में धरे। इसमें प्रमाण—

शुनां च पतितानां च श्वपचां पापरोगिणाम्।

वायसायं कृमीणां च शनकैर्निर्वपेद् भुवि।। मनु०।।

इस प्रकार 'श्वभ्यो नमः, पतितेभ्यो नमः, श्वपग्भ्यो नमः, पापरोगिभ्यो नमः, वायसेभ्यो नमः, कृमिभ्यो नमः।' धर कर पश्चात् किसी दुःखी बुभुक्षित प्राणी अथवा कुत्ते, कौवे आदि को दे देवे।

यहां नमः शब्द का अर्थ अन्न अर्थात् कुत्ते, पापी, चाण्डाल, पापरोगी कौवे और कृमि अर्थात् चींटी आदि को अन्न देना यह मनुस्मृति आदि की विधि है। हवन करने का प्रयोजन यह है कि—पाकशालस्थ वायु का शुद्ध होना और जो अज्ञात अदृष्ट जीवों की हत्या होती है उस का प्रत्युपकार कर देना।

अब पांचवीं अतिथिसेवा—अतिथि उस को कहते हैं कि जिस की कोई तिथि निश्चित न हो अर्थात् अकस्मात् धार्मिक, सत्योपदेशक, सब के उपकारार्थ सर्वत्र घूमने वाला, पूर्ण विद्वान्, परमयोगी, संन्यासी गृहस्थ के यहां आवे तो उस को प्रथम पाद्य, अर्घ आचमनीय तीन प्रकार का जल देकर, पश्चात् आसन पर सत्कारपूर्वक बिठाल कर, खान, पान आदि उत्तमोत्तम पदार्थों से सेवा शुश्रूषा कर के उन को प्रसन्न करे। पश्चात् सत्संग कर उन से ज्ञान विज्ञान आदि जिन से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होवे ऐसे-ऐसे उपदेशों का श्रवण करे और चाल चलन भी उनके सद्गुणानुसार रक्खे। समय पाके गृहस्थ और राजादि भी अतिथिवत् सत्कार करने योग्य हैं। परन्तु—

पाषण्डिनो विकर्मस्थान् वैडालवृत्तिकान् शठान्।

हैतुकान् वकवृत्तीश्च वाड्मात्रेणापि नार्चयेत्।। मनु०।।

(पाषण्डी) अर्थात् वेदनिन्दक, वेदविरुद्ध आचारण करने वाले (विकर्मस्थ) जो वेदविरुद्ध कर्म का कर्ता मिथ्याभाषणादि युक्त, वैडालवृत्तिक जैसे विडाला छिप और स्थिर होकर ताकता—ताकता झपट से मूषे आदि प्राणियों का मार अपना पेट भरता है वैसे जनों का नाम वैडालवृत्ति, (शठ) अर्थात् हठी, दुराग्रही, अभिमानी, आप जाने नहीं, औरों का कहा मानें नहीं, (हैतुक) कृतकी व्यर्थ बकने वाले जैसे कि आजकल के वेदान्ती बकते हैं 'हम ब्रह्म और जगत् मिथ्या है वेदादि शास्त्र और ईश्वर भी कल्पित हैं' इत्यादि गपोड़ा हांकने वाले (वकवृत्ति) जैसे वक एक पैर उठा ध्यानावस्थित के समान होकर झट मच्छी के प्राण हरके अपना स्वार्थ सिद्ध करता है वैसे आजकल के वैरागी और खाखी आदि हठी दुराग्रही वेदविरोधी हैं, ऐसों का सत्कार वाणीमात्र से भी न करना चाहिये। क्योंकि इनका सत्कार करने से ये वृद्धि को पाकर संसार को अधर्मयुक्त करते हैं। आप तो अवनति के काम करते ही हैं परन्तु साथ में सेवक को भी अविद्यारूपी महासागर में डुबा देते हैं।

इन पांच महायज्ञों का फल यह है कि ब्रह्मयज्ञ के करने से विद्या, शिक्षा, धर्म, सभ्यता, आदि शुभ गुणों की वृद्धि।

अग्निहोत्र से वायु, वृष्टि, जल की शुद्धि होकर वृष्टि द्वारा संसार को सुख प्राप्त होना अर्थात् शुद्ध वायु का श्वास, स्पर्श, खान पान से आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम बढ़ के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का अनुष्ठान पूरा होना। इसीलिये इस को देवयज्ञ कहते हैं।

पितृयज्ञ से जब माता पिता और ज्ञान महात्माओं की सेवा करेगा तब उस का ज्ञान बढ़ेगा। उस से सत्यासत्य का निर्णय कर सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करके सुखी रहेगा। दूसरा कृतज्ञता अर्थात् जैसी सेवा माता-पिता और आचार्य ने सन्तान और शिष्यों की की है उसका बदला देना उचित ही है। बलिवैश्वदेव का भी फल जो पूर्व कह आये, वही है।

जब तक उत्तम अतिथि जगत् में नहीं होते तब तक उन्नति भी नहीं होती। उनके सब देखों में घूमने और सत्योपदेश करने से पाषण्ड की वृद्धि नहीं होती और सर्वत्र गृहस्थों को सहज से सत्य विज्ञान की प्राप्ति होती रहती है और मनुष्यमात्र में एक ही धर्म स्थिर रहता है। बिना अतिथियों के सन्देहनिवृत्ति नहीं होती। सन्देहनिवृत्ति के बिना दृढ़ निश्चय भी नहीं होता। निश्चय के बिना सुख कहाँ?

ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत्।

कायक्लेशाँश्च तन्मूलान् वेदतत्त्वार्थमेव च।। मनु०।।

रात्रि के चौथे पहर अथवा चार घड़ी रात से उठे। आवश्यक कार्य करके धर्म और अर्थ, शरीर के रोगों का निदान और परमात्मा का ध्यान करे। कभी अधर्म का आचरण न करे। क्योंकि—

नाधर्मश्चरितो लोके सद्यः फलति गौरिव।

शनैरावर्तमानस्तु कर्तुर्मूलानि कृन्तति। मनु०।।

— क्रमशः

आर्य जगत् के भीष्म पितामह

धरोहर

स्वामी भीष्म जी महाराज



स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा

उ०प्र०, लखनऊ

संचालक—गुरुकुल पूठ, हापुड़

मो० ६८३७४०२९६२

स्वामी जी सम्बोधन में कहते थे बेटियों और बहनों! भाई माँ की उम्र की तो यहाँ कोई अब बची नहीं अतः ऐसा बोला है स्वामी जी हृदय से अति पवित्र थे एक बार अलीगढ़ जिले में बझेड़ा कला ग्राम में कार्यक्रम था स्वामी प्रज्ञानन्द जी ने उत्सव कराया था मुझे भी ब्रह्मचारियों के साथ व्यायाम प्रदर्शन हेतु बुलाया था स्वामी भीष्म जी म० बेगराज जी स्वामी नारायण जी क्रान्तिकारी भी वहाँ उपस्थित थे मैं भी उन दिनों व्यायाम प्रदर्शन किया करता था प्रणायाम द्वारा सरिया मोड़ना— जन्जीर तोड़ना, पत्थर छाती पर रखकर तुड़वाना, थाल फाड़ना हाथों से आदि—आदि जब आँख पर रखकर सरिया मोड़ रहा था तो स्वामी जी आकर बोले भाई क्यों आँखें फुडवावे रहन दे थोड़ा कपड़ा तो लगा ले कहीं खाल छिल गई तो भी परेशानी रहेगी फिर थाल की जगह तस्तरी पीपल की भारी आ गई स्वामी जी देखकर बोले भाई ऐसी नहीं क्यों इस बालक न मरवाओ! खैर तस्तरी के जब दो भाग हो गये तब स्वयं मञ्च पर आकर माइक लिया और बोले भाई! यह ब्र० तो वास्तव में जादूगर सा लग रहा है मुझे विश्वास नहीं था क्योंकि आर्य समाज में जो व्यायाम प्रदर्शन करने वाले ब्रह्मचारी हैं थोड़े ही हैं तथा भीमकाय है जयन्त जैसे पर छोटे शरीर से यह चमत्कार करके मुझे भी प्रभावित किया है मेरा इसे बहुत—बहुत आशीर्वाद है इतने भावुक और सहृदयी थे स्वामी भीष्म जी स्वामी जी सरल स्वभाव से ही लोगों के मन की जीत लेते थे आपने प्रेरणा प्रदान करने को बहुत भजन बनाये हैं जो पुस्तकें छपी हैं अब एक सुन्दर पुस्तक मनु संस्कृति संस्थान द्वारा ठाकुर विक्रम सिंह जी ने छपवाई है वे सभी स्वामी भीष्म जी से बहुत प्रभावित रहे हैं आप कहते हैं कि जो राष्ट्र निर्माण पार्टी बनाई है वह स्वामी भीष्म जी जैसे देशभक्त के भजन सुनकर ही प्रेरणा मिली है अंग्रेजों के विरुद्ध अपने जन आन्दोलन चलाया फिर नेहरू और गाँधी तथा कांग्रेस के विरुद्ध अभियान चलता रहा कि स्वराज्य के बाद सुराज्य लाना है यह उनका विशेष अभिप्राय था— उनके कारनामों से दुःखी होकर लिखा कि —

शेष पृष्ठ ४ पर

स्वामी भीष्म जी महाराज का नाम सुनते ही महाभारत के भीष्म जी की याद आ जाती है लेकिन उन भीष्म जी में और आर्य सन्यासी भीष्म जी में बहुत अन्तर है। महाभारत के भीष्म जी ने मात्र अपने पिता जी की इच्छा पूरी करने एवं हस्तिनापुर के राज्य का स्वामी होते हुए भी दुर्योधन को कुछ नहीं कह सकते थे और स्वयं भी दुःखी रहते थे।

इधर आर्य सन्यासी स्वामी भीष्म जी महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों से प्रभावित होकर ब्रह्मचारी बनें और समाज सेवा का व्रत लिया देश की रक्षा और धर्म की रक्षा हेतु पूरे देश में वैदिक विचारों का प्रचार और प्रसार किया।

हरयाणा प्रान्त के करनाल जिले में घरोण्डा नाम का स्थान है वहाँ से आपकी पहचान है वहाँ आश्रम बनाया एक आश्रम गाजियाबाद हिन्दन नदी के पास बसे ग्राम के जंगल में करहेड़ा के पास आश्रम बनाकर लम्बे समय तक रहे आप आर्य समाज के भजनोपदेशक के रूप में भी प्रसिद्ध हुए दिल्ली के आस-पास में आज भी आपका प्रभाव देखा जा सकता है जितने भी पुराने आर्य हैं वे सभी गर्व सहित कहते हैं कि हमें तो प्रेरणा स्वामी भीष्म जी के भजन सुनकर मिली थी जेलों में जाकर आजादी के लिए यातनायें सहन की। आर्य नेता श्री रामचन्द्र जी विकल राज्यसभा के सांसद रहे कहा करते थे कि स्वामी भीष्म जी के भजन सुनकर आर्य समाज के प्रभाव में आये, पूर्व मन्त्री एवं राज्य सभा के सांसद डी०पी० यादव जी के पिता मा० तेजपाल आर्य अभी दिवंगत हुए हैं वे बताया करते थे कि स्वामी भीष्म जी के भजन सुनकर आर्य बने तथा आजादी के लिए जेल यातनायें सहन की हैं ऐसे हजारों युवाओं को ग्राम-ग्राम जाकर स्वामी जी प्रेरणा प्रदान कर चरित्र निर्माण की शिक्षा दिया करते थे देश की रक्षा और आजादी के लिए अपने उपदेश में प्रेरणा प्रदान करना मुख्य विषय रहता था— स्वामी भीष्म जी को १९६२ की लड़ाई चीन और भारत की हुई थी तब सीमा पर भेजा गया वहाँ भारतीय सैनिकों को उत्साहित करने के लिए कैम्पों में जाकर गीत सुनाकर प्रेरणा दिया करते थे उसकी पंक्तियाँ इस प्रकार हैं—

चलो बजी आज रण भेरी मत करो जवानो देरी।
दुश्मन ने घाटियाँ घेरी भयंकर जंग होगा नौ जवानो।।

भजन बड़ा भी है तथा सुन्दर भी है बचपन में हमने पाकिस्तान की लड़ाई १९६५ में हमने याद किया था और ग्राम-ग्राम में हम इस भजन को गाकर लोगों में जोश पैदा किया करते थे। स्वामी जी ने इस गीत में मानों गीता उपदेश कर दिया है उन्होंने लिखा —

जो नहीं आपको माने, उसके न बाप को माने।
युद्ध में जो पाप को माने, तो रंग में भंग होगा नौजवानो।
इकले ने युद्ध दस दिन का, लड़ा समझो जिक्र है जिनका।
कहें भीष्म लड़ेगे उनका, वज्र सम अंग होना नौजवानों।

इस प्रकार के गीत गाकर चीन की लड़ाई में आप सैनिकों में जोश भरकर सीमा पर जाने के

लिए प्रेरणा दिया करते थे ऐसे क्रान्तिकारी स्वामी भीष्म जी को आज की सरकार भूल गई है कोई नाम लेवा पानी देवा तक नहीं है।

मुझे कई फोन आये कि स्वामी भीष्म जी के विषय में भी लिखो मैं जब छोटा सा बालक था १९६५ में पाक-भारत युद्ध चल रहा था उसी वर्ष हमारा प्रवेश गुरुकुल में हुआ था गुरुकुल के कार्यक्रम में स्वामी भीष्म जी म० बेगराज जी आर्य आये थे और उन्होंने भजन गाते समय कहा था कि देश को आज जो प्रधान मन्त्री मिला है वह सच्चा देश भक्त है दिल्ली के किसी कार्यक्रम में श्री लालबहादुर शास्त्री से भेंट चर्चा बताते हुए कहा था कि हमें पाक-सीमा पर जाने को कह रहे हैं हम जायेगें और युवकों को प्रेरणा देंगे हम निश्चित विजयी होंगे पर देश का दुर्भाग्य ताशकन्द समझौते में बदल गया और प्रधान मन्त्री सदा के लिए अमर हो गए इससे विदित होता है कि स्वामी भीष्म जी कितने महान् राष्ट्रपुरुष थे आपकी वाणी में गम्भीरता थी शरीर भीमकाय बलवान था। ब्रह्मचर्य की साक्षात् प्रतिमा, उभरा हुआ सीना, चमकीली आँखें, देदीप्यमान मुखमण्डल देखते ही व्यक्ति चरणों की ओर चलता था, आपके गैरिक काषाय वस्त्रों का भी प्रभाव पड़ता था आपके भजन और संस्मरण बचपन से ही सुनते और उनकी सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त करता रहा एक बार गुरुकुल ततारपुर में ठहरे हुए थे वे नीम अथवा बबूल की मोटी दातून किया करते थे मुझे कहा ब्र० जी दातून लेकर आओ प्रातःकाल जब उसे चबा रहे थे तब एक सज्जन आकर कहने लगे कि स्वामी जी आपके दाँत अभी असली हैं या नकली तो स्वामी जी बोले मेरे मुख में एक अंगुली डालकर देख तुझे अभी पता चल जायेगा। वह बेचारा शर्माकर चुपचाप चला गया। प्रातःकाल व्यायाम करना उनकी दिनचर्या का एक अनिवार्य नियम था वे कहा करते थे कि बिना व्यायाम, बिना सन्ध्या, स्वाध्याय, तथा साधना किये कोई भी ब्रह्मचर्य का पालन नहीं कर सकता यह उनका अनुभव था। लगभग उस समय उनकी आयु १०० वर्ष की थी लेकिन शरीर में कोई कृशता नहीं थी वे प्रचार भी किया करते थे प्रातः काल खिचड़ी खाना उन्हें अच्छा लगता था एक दिन मैंने कहा स्वामी जी आप खिचड़ी खाते हो यह तो बीमार लोग खाते हैं जैसा प्रायः देखा जाता है फिर बताया खिचड़ी तेरे चार यार, घी, पापड़, दही, अचार।

अतः घी को महत्व देता हूँ फिर अब वृद्धावस्था भी है पाचन शक्ति देखकर ही खाना अच्छा रहता है। ऐसे स्वामी भीष्म जी आर्य जगत् के प्रभावशाली तेजस्वी उपदेशक रहे हैं आपने आर्य राष्ट्र निर्माण के लिए हरयाणा में विशेष प्रचार किया स्वामी इन्द्रवेश जी तथा स्वामी अग्निवेश जी ने सन्यास दीक्षा लेकर आर्य राष्ट्र निर्माण का संकल्प लिया था उस समय जहाँ भी सम्मेलन होते अथवा सम्मेलन के लिए प्रचार किया जाता वहीं पर स्वामी भीष्म जी निश्चित रूप से उपस्थित होकर इनको आशीर्वाद देते थे।

समस्त अव्यवस्था एवं भ्रष्टाचार का मूल - नास्तिकता

— नवीन मिश्र

समस्त संसार के अधिकांश लोग ऐसा मानते हैं कि भारत वर्ष एक धार्मिक देश है। हम भी यदि अपने देश पर दृष्टिपात करें तो ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे देश पर वर्ष पर्यन्त हर जगह हर समय धार्मिक आयोजन होते रहते हैं। कहीं भी रात्रि जागरण, कीर्तन, अखण्ड पाठ व तीर्थ यात्रा करते हुए लोगों को देखा जा सकता है। वास्तव में यदि ये कृत्य धर्म-कर्म होते तो इस देश में इतना भ्रष्टाचार नहीं होता।

धर्म के विषय में महर्षि कणाद का वाक्य है कि “यतोऽभ्युदयनिः श्रेयससिद्धिः स धर्मः” अर्थात् धर्म वह आचरण है जिससे हमारे इस लोक तथा परलोक, दोनों का सुधार हो। धर्म का स्वरूप आन्तरिक था, जोकि पूर्णतः दिखावे में बदल चुका है। वास्तविकता तो ये है कि अधिकांश लोग धर्म एवं ईश्वर को जानते ही नहीं हैं। यदि ये लोग धर्म एवं ईश्वर को जानते तथा मानते होते तो ईश्वर (सर्वशक्तिमान) से सर्वाधिक भय होता तथा वे पाप कर्म (भ्रष्टाचार) से बचे रहते।

ईश्वर का क्या स्वरूप है? इसको आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के प्रथम दो नियमों में स्पष्ट किया है। प्रथम नियम को समझकर हम ईश्वर के प्रति दृढ़ आस्थावन् होकर सच्चे ईश्वर भक्त एवं आस्तिक बन सकते हैं।

इसी प्रकार द्वितीय नियम को समझकर तथा व्यवहारिक जीवन में अपनाकर हम भ्रष्टाचार एवं पाप-कर्म से बच सकते हैं। उदाहरणार्थ यदि हमने ये जान लिया कि ईश्वर एक सर्वव्यापक सत्ता है, तो उससे छुपकर चोरी, पापकर्म, भ्रष्टाचार आदि कैसे कर सकते हैं? वह सत्ता सर्वशक्तिमान सत्ता (ईश्वर) की न्याय व्यवस्था एवं दण्ड व्यवस्था से कोई भी पापी या भ्रष्टाचारी बच नहीं सकता है। उस सर्वशक्तिमान (ईश्वर) के विषय में आर्यसमाज के वैज्ञानिक सन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती ने लिखा है—

व्यापक है जो जड़ जगत् में, ईश्वर नियमों का चहुँ ओर। करता लोक सकल है बस में, भाग न सकता कोई चोर।।

जब कोई व्यक्ति जड़पूजा (मूर्तिपूजा) के रूप में ईश्वर की पूजा करता है तो वह उस सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान सत्ता को एकदेशी एवं जड़ मान लेता है, फलस्वरूप ईश्वर का भय उसको नहीं रहता है और यदि भय होता भी तो ये तथाकथित धर्म के ठेकेदार, लोगों को

मूर्ख बनाकर कहते हैं कि ये जाप कराओ, मुझे गुरु मान लो, मैं आपके सम्पूर्ण पाप क्षमा कराके ईश्वर से मिला दूंगा तथा लोग उनके बहकावे में आकर ईश्वर के स्थान पर गुरुओं को पूजने लगते हैं। वास्तविकता ये है कि आज ये गुरु ईश्वर के प्रतिद्वन्दी बने बैठे हैं। ये लोग तीर्थ यात्रा, जाप, अखण्ड पाठ, भावगत सप्ताह आदि की प्रेरणा देकर पाप-मुक्ति के उपाय बताते हैं तथा लोग धर्म-कर्म करने के बाद स्वयं को पाप-मुक्त मान बैठते हैं तथा पुनः भ्रष्टाचार आदि पाप-कर्म करते हैं उपर्युक्त धर्म-कर्म कराने के बाद ये तीर्थ गुरु पाप से मुक्ति का प्रमाण पत्र दे देते हैं।

जिस कर्म को करते समय आत्मा को लज्जा, भय और शंका की अनुभूति हो वे सब भ्रष्टाचार आदि पाप-कर्म ही हैं। ईश्वर की सत्ता को ठीक से नहीं जानने के कारण मनुष्य का आत्म पाप-कर्म करते समय सर्वव्यापक सत्ता (ईश्वर) को भुला देता है, जिसके कारण समाज में आज सर्वत्र भ्रष्टाचार का बोलबाला है। देश के अनेक तथाकथित साधु, सन्त महात्मा, पण्डे, पुजारी, कथावाचक, सन्यासी एवं तीर्थगुरु आदि छल-कपट के माध्यम से भोली जनता को मूर्ख बनाकर करोड़ों रुपये की कमाई कर रहे हैं।

वेद प्रतिपादित ईश्वर का स्वरूप आर्यसमाज के प्रथम दो नियमों में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने समझाया है। ये नियम इस प्रकार हैं—

१. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

२. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी का उपासना करनी योग्य है।

भ्रष्टाचार मुक्त भारत के निर्माण हेतु महर्षि दयानन्द के आस्तिकता सम्बन्धी आर्यसमाज के उपरोक्त दोनों नियमों को जन-जन को समझाना एवं समझना पड़ेगा। प्रथम नियम—समस्त सत्य विद्या अर्थात् वेद, और उससे पदार्थ विद्या का जो ज्ञान होता है उस सबका, कारण का कारण अर्थात् सबका आदि मूल परमेश्वर है। ईश्वर—प्राणिधान की स्थिति को प्राप्त करने के लिए इस प्रकार का आस्तिकता सिद्धान्त अन्यत्र दुर्लभ है। द्वितीय

नियम को अच्छी तरह जानकर तथा उपासना काल एवं व्यवहार काल में अपनाकर हम एक सच्चे ईश्वर भक्त बन सकते हैं।

एक और विडम्बना है कि जो आर्यसमाज ईश्वर के सत्य स्वरूप को प्रस्तुत करता है, उसके विषय में इन तथाकथित धर्म गुरुओं ने एक भ्रान्ति फैला रखी है कि आर्यसमाजी नास्तिक होते हैं। इन धर्म गुरुओं को उत्तर देने के लिए आर्यसमाज का प्रथम नियम ही काफी है। विचार करें कि नास्तिकता सच्चिदानन्द ईश्वर की उपासना है या जड़पूजा। वास्तव में भ्रष्टाचार का मूल जड़पूजा ही है जिसके कारण उस चेतन सर्वव्यापक ब्रह्म का भय लोगों को नहीं रहा है।

भ्रष्टाचार मुक्त भारत निर्माण हेतु निर्माण हेतु प्रत्येक देशवासी को ईश्वर-भक्त बनाना होगा अर्थात् ऐसा ईश्वर भक्त जो परमेश्वर की सर्वव्यापकता का अनुभव करते हुए भ्रष्टाचार (पाप-कर्म) करते समय न्यायकारी ईश्वर से डरे। अभी स्थिति कुछ इस प्रकार है—

“नर तुच्छ देखें सामने तो पाप से रुक जाई हैं। सर्वत्र व्यापक ब्रह्म से पर मूढ़ नहीं सकुचाई हैं।।”

अर्थात् ५-६ वर्ष के बालक के बराबर भी ईश्वर का भय नहीं है। ईश्वर से भय तभी होगा जब हम ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को जानने का प्रयास करेंगे।

ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जानने के लिए हमें महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों को समझना एवं समझाना होगा क्योंकि महर्षि दयानन्द, सरस्वती ही एक मात्र ऐसे सन्यासी हुए हैं जिन्होंने ईश्वर को जानने के लिए ही घर-परिवार छोड़ा था तथा जब तक सच्चे शिव के स्वरूप को जान नहीं लिया तब तक उन्होंने विश्राम नहीं किया। अन्त में वेद प्रतिपादित ईश्वर का सत्य स्वरूप समस्त संसार के समक्ष रख दिया। वेद के निम्नांकित मंत्र में ईश्वर को जीव का सखा बताया गया है—

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते। तयोर्न्यः पिप्पलं स्वाद्वत्तानवन्त्र्यो अभिचाकशीति॥

अर्थात् जीवात्मा को परमात्मा का सखा बनने के लिए निर्विकार बनना पड़ेगा और अपने सखा ईश्वर के गुण न्यायकारी, दयालु, निर्विकार, अभय, पवित्रता आदि को धारण करना पड़ेगा तब ईश्वर का सच्चा उपासक बनकर पाप-कर्म (भ्रष्टाचार) आदि से बच सकेगा। आइए हम सब मिलकर ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जानें, मानें तथा प्रचारित करें, तभी हमारी राष्ट्र भ्रष्टाचार से मुक्त होकर आदर्श चरित्रवान् राष्ट्र बन सकेगा। ये हमारी कोरी कल्पना नहीं है। कभी इस देश के सभी लोग सच्चे ईश्वर भक्त तथा वैदिकधर्मी हुआ करते थे तथा यहां के आर्य राजा अश्वपति सम्पूर्ण राष्ट्र के बारे में घोषणा करते हुए पूर्ण आत्मविश्वास के साथ कहते थे कि—

“न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न च मयपः। नानाहिताग्निर्ना विद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः॥

अर्थात् मेरे सम्पूर्ण राज्य में एक भी चोर नहीं है, एक भी कंजूस नहीं है, एक भी व्यक्ति नशे का सेवन नहीं करता है, एक भी परिवार ऐसा नहीं, जहां दैनिक यज्ञ न होता हो। सम्पूर्ण राज्य में कोई भी मूर्ख नहीं है, एक भी व्यक्ति व्यभिचारी या व्यभिचारिणी नहीं है। आइए हम सब मिलकर पुनः वेदमार्ग पर चलते हुए व्यसन मुक्त एवं भ्रष्टाचार मुक्त भारत का निर्माण करें तथा ईश्वर के सच्चे सखा बनकर निर्भय होकर विचरें तथा देश को नास्तिकता से हटाकर आस्तिकता की ओर ले चलें और ये देश पुनः आर्यावर्त कहा जाए।

पृष्ठ ३ का शेष

आर्य जगत के भीष्म पितामह

जनता भड़केगी, कि लाठी खडकेगी।

कि धरती का लाल-लाल रंग होगा।।

जनता इन नेताओं को— सफेद टोपी वालों को चुन-चुन कर मारेगी।

इस प्रकार गीत सुनाकर नेताओं को सावधान किया कि समय पर सभल जाओ फिर दोष मत देना इतने क्रान्तिकारी विचारों से परिपूर्ण उपदेशक थे स्वामी भीष्म जी महाराज उनके विषय में तो विस्तार से एक दर्शन उनका चिन्तन और उनकी सामाजिक सेवाओं पर अनुसन्धान की आवश्यकता है १२८ वर्ष की आयु तक वेद प्रचार करने वाले क्रान्तिकारी साधु ने आखाड़े चलाये आश्रम खोले गुरुकुल धरोण्डा आज भी है जो स्वामी रामेश्वरानन्द जी इनके शिष्य उसका संचालन करते रहे और एक बार लोक सभा से सांसद बनकर आर्य समाज की गरिमा बढ़ाई ऐसे आर्य सन्यासियों का इतिहास

भावी पीढ़ी को सदैव प्रेरणा प्रदान करता रहेगा। हरयाणा और पश्चिम उ०प्र० विशेष रूप से स्वामी जी वेदप्रचारार्थ जाते थे उनका गीत संग्रह भी लोग पढ़ते थे यही उनके विचारों की कहानी आज शेष है जो हमें सदैव प्रेरणा प्रदान करती रहेगी। क्योंकि साक्षात् लाभ लेने वाले आर्यों में से तो अब कोई ही बचा होगा यदि है तो सौभाग्यशाली है उससे प्रार्थना करूंगा कि वह अपने संस्मरणों से आर्यजगत को लाभान्वित करें मैं उनका सदैव सम्मान के साथ प्रकाशन करूंगा।

पुनः आर्यजगत् के गौरव समाज सुधारक देश भक्त धर्म प्रचारक आदित्य ब्रह्मचारी स्वामी भीष्म जी के सम्मान में अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हुए नमन करता हूँ।

गुरुकुल पूठ, (हापुड़)

“विश्व में सत्य की प्रचारक धार्मिक एवं सामाजिक संस्था आर्य समाज”

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

सत्य को मानना व उसका प्रचार करना ही धर्म है और जो असत्य है उसे जानना व उसका त्याग करना व कराना भी धर्म ही है। आजकल हम देखते हैं कि संसार अनेक मत-मतान्तर व पंथों से भरा हुआ है। सबकी परस्पर कुछ समान व कुछ असमान मान्यताएँ हैं। सबके अपने अपने धर्म ग्रन्थ भी हैं। इनका अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि न इनमें पूर्ण ज्ञान विज्ञान है और न ही हममें आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करने के लिए पूर्ण या पर्याप्त साधन ही बताये गये हैं।

वेद व वैदिक साहित्य इसका अपवाद हैं। प्रायः सभी मत-मतान्तर मध्यकाल में उत्पन्न हुए जब ज्ञान व विज्ञान अविकसित व अनुन्नत अवस्था में थे। इसी कारण स्वाभाविक रूप से सभी मतों व पंथों में असत्य व अज्ञान से युक्त मान्यताएँ विद्यमान हैं जिन्हें यदि जानकर हटा दिया जाय तो देश व विश्व में शान्ति स्थापित होने के साथ संसार के सभी लोग सुखी हो सकते हैं। मत-मतान्तरों के सभी प्रकार के लड़ाई झगड़े बन्द हो सकते हैं।

इनके अनुयायियों में होने वाली हिंसा रूक सकती है। सबमें परस्पर एकता स्थापित हो सकती है। सभी ईश्वर के सत्य स्वरूप को जानकर व उसके उपासक बनकर स्वहित व स्वकल्याण कर सकते हैं। ऐसा होने पर मनुष्य स्वतः अन्याय, शोषण व अनुचित कार्य छोड़कर सत्य का ग्रहण कर लाभान्वित हो सकते हैं। इन लाभों को भुलाकर सभी मत-मतान्तर अपनी मान्यताओं के सत्यासत्य का विचार ही नहीं करना चाहते? क्यों नहीं चाहते? इसका अनुमान सुधी व विज्ञ जन लगा सकते हैं।

इन मतों से लोगों के जो स्वार्थ जुड़े हुए हैं उन्हें वह छोड़ना नहीं चाहते। जब तक ऐसा नहीं होगा, मत-मतान्तरों के झगड़े समाप्त न होंगे, वृद्धि न होने से मनुष्य ईश्वर व जीवात्मा विषयक सत्य ज्ञान से अनभिज्ञ होने के कारण ईश्वर की उपासना व ईश्वरीय कर्म फल व्यवस्था के विधान को न जानकर अपना मनुष्य जीवन व्यर्थ करता रहेगा। अतः मत-मतान्तरों ने अपने अनुयायियों के मानसिक, आत्मिक, और विद्यावृद्धि के कार्य में स्थाई रूप से बाधाएँ खड़ी कर दी हैं। इनके सुधार की समय सीमा कोई नहीं बता सकता।

वैदिक मत व इतर सनातनी पौराणिक मत आदि में क्या अन्तर हैं? वैदिक मत वेद की सत्य मान्यताओं पर आधारित धर्म है वहीं महाभारत काल के बाद पतन होने से यह अज्ञान, अन्धविश्वासों से युक्त होने के कारण पौराणिक मत बन गया। अन्य मतों में जो जो अविद्याजन्य बातें हैं उसका कारण भी सनातनी पौराणिक मत को ही मान सकते हैं। मनुष्य के वस्त्र जब मैले जो जायें तो उन्हें धोकर स्वच्छ करना होता है। इसी प्रकार मनुष्य का शरीर दूषित वायु आदि के सम्पर्क में आकर निरन्तर दूषित होने के कारण उसे प्रतिदिन एक या दो बार स्नान से स्वच्छ

करना होता है। इसी प्रकार से धर्म व मत-मतान्तरों को भी सत्य व विद्यारूपी जल से स्नान करने की अपेक्षा रहती है। मत व तथाकथित धर्म क्योंकि विद्या व सत्य विचारों रूपी जल का स्नान नहीं करते इसी कारण उनमें असत्य व अविद्याजन्य मान्यताओं का प्रदूषण हो चुका है। इसको दूर करने के लिए वेद व वैदिक ज्ञान रूपी साहित्य वा साबुन से इनका सुधार व परिष्कार करना आवश्यक है।

ऋषि दयानन्द जी ने यही कार्य किया था। इससे लोगों के स्वार्थों को हानि पहुँच रही थी। वह सब उनके विरोधी हो गये। दूसरे व पराये तो विरोधी हुए ही उनके अपने सनातन मत के अनुयायी भी विरोधी हो गये। वह सत्य को सहन नहीं कर सके। सत्य को समझने की शक्ति ही उनमें नहीं थी। इसका जो परिणाम होना था वहीं हुआ। ऋषि दयानन्द के विरुद्ध षड्यन्त्र करके उन्हें कालकूट विष दे दिया गया जिसके कारण ३० अक्टूबर, सन् १८८३ को दीपावली के दिन सायं समय उनकी मृत्यु वा बलिदान हो गये। वह तो मोक्ष में चले गये।

समाज व देश आंशिक सुधार को प्राप्त तो हुआ परन्तु पौराणिकता, अज्ञान, असत्य मान्यताओं व परम्पराओं का प्रचलन पूर्णतः दूर नहीं हुआ।

अविद्या दूर करने व सत्य का सर्वत्र प्रचार करने के लिए ही ऋषि दयानन्द ने अपने विद्या गुरु प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती की आज्ञा से देशवासियों के समग्र कल्याण के लिए, असत्य के खण्डन व सत्य के मण्डन के सिद्धान्त को अपनाया था। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि उनका उद्देश्य व लक्ष्य था। वह चाहते थे कि सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में सब परतन्त्र रहे और प्रत्येक हितकारी नियम के पालन करने में स्वतन्त्र रहें। यह आर्यसमाज के नियम हैं पन्तु समाज ने इन्हें भली प्रकार से अपनाया नहीं है। स्वामी जी ने उपदेश व व्याख्यानों द्वारा देश भर में जा जाकर प्रचार किया। उन्होंने विपक्षी व विधर्मियों से शास्त्रार्थ कर सत्य की स्थापना का भी कार्य किया।

स्थायी प्रचार की दृष्टि से उन्होंने सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, पंचमहायज्ञविधि, गोकररुणानिधि, व्यवहारभानु, वेदाभाष्य आदि के महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न किये। हमारा विचार है कि देश व विश्व के लोग यदि निःस्वार्थ भाव से ऋषि दयानन्द जी की वैदिक विचारधार पर विचार करते तो परस्पर एकता हो जाती, सत्य गौरवान्वित व स्थापित होता, सबकी एक पूजा वा उपासना पद्धति होती, एक ही शिक्षा पद्धति होती जो सबके लिए समान, निःशुल्क व अनिवार्य होती, अविद्या का नाश हो जाता और सभी मनुष्य सगे सम्बन्धियों के समान परस्पर व्यवहार करते। सुख व समृद्धि के साधक सत्य-ज्ञान युग का आरम्भ सर्वत्र होता।

साम्प्रदायिक मत-सम्प्रदाय के लोगों का सहयोग न मिलने के कारण एक महत्त्वपूर्ण कार्य होने से रुक गया।

हम अनुमान करते हैं कि यदि विश्व में सुख व शान्ति का साम्राज्य स्थापित करना है तो इसके लिए असत्य व अज्ञान को पूर्णतया तिलांजलि देना होगी। धर्म हो या सामाजिक मान्यताएँ या परम्पराएँ, सभी को सत्य ज्ञान पर स्थापित करना होगा। सभी भले लोगों को सत्य मत को अपनाना चाहिए और असत्य मत व मान्यताओं का त्यागकरना चाहिए। यही एक मात्र साधन प्रतीत होता है पूर्ण सत्य की स्थापना का।

ऋषि दयानन्द व उनके बाद पहली पीढ़ी के आर्य विद्वानों व नेताओं ने यही कार्य किया जिसका समाज पर अनुकूल प्रभाव भी पड़ा। देश स्वतन्त्र हुआ और सामाजिक विकृतियाँ पूर्णतया तो नहीं किन्तु आंशिक रूप से इनमें सुधार अवश्य हुआ है। यह काम सम्प्रति मन्द पड़ गया है। इसे तीव्र गति से चलाना चाहिए। सरकार का सहयोग भी इस कार्य में आर्यसमाज व इसकी संस्थाओं को मिलना चाहिये।

वेद संसार में शान्ति प्रदान कराने वाला का एक धर्म-वृक्ष है। इसके नीचे जो बैठेगा वह ज्ञानी होगा, सुख व शान्ति प्राप्त करेगा और जन्म-जन्मान्तर में भी उसका कल्याण होगा। इसके विपरीत जीवन बिताने से लाभ क्षणिक व कम तथा हानि अधिक होगी।

आर्यसमाज सत्य की प्रचारक धार्मिक व सामाजिक संस्था है। सभी मनुष्यों को इस कार्य में सहयोग देना चाहिये और अपने स्वार्थों के लिए समाज में मतभेद पैदा करने वाले लोगों को अच्छा सबक सिखाना चाहिए। ओ३म् शम्।

निवार्यन

आर्य समाज फरीदपुर का वार्षिक चुनाव श्री एडवोकेट मंत्री दिनेश कश्यप के समक्ष आर्य समाज का चुनाव निर्विरोध दिनांक २७.०८.२०१७ को हुआ। जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये।

1. सर्व श्री विजय बहादुर गौड़ (प्रधान, आर्य समाज फरीदपुर)।
2. सर्व श्री रामनरेश गौड़ (मंत्री आर्य समाज फरीदपुर)
3. सर्व श्री मनोज अग्रवाल (कोषाध्यक्ष, आर्य समाज फरीदपुर)

प्रशंसा से पिघलना नहीं,
आलोचना से उबलना नहीं।
निःस्वार्थ भाव से कर्म करते
रहे, क्योंकि इस धरा का, इस धरा
पर, सब धरा रह जायेगा।

स्थापित 1886 ई०
पंजीकरण तिथि 5 जनवरी, 1897

ओ३म्

☎: 0522-2286328

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

श्री नारायण स्वामी भवन, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ-226001

ई-मेल-apsabhaup86@gmail.com

पत्रांक

435

दिनांक: 06/11/2017

सेवा में,

श्री समस्त पदाधिकारी/सहयुक्त/प्रतिष्ठित सदस्य/

अन्तरंग सभा,
आर्य प्रतिनिधि सभा, लखनऊ

महोदय,

संस्था की अन्तरंग सभा (प्रबन्ध समिति) की बैठक दिनांक-12-11-2017 का एजेण्डा पत्रांक-384 दिनांक-11-10-2017 द्वारा हस्ताक्षरित एवं जारी हो चुका था।

वर्तमान में आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ की अन्तरंग सभा (प्रबन्ध समिति) की संख्या-86 है। आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ की नियमावली के नियम-10 (7) में दी गई व्यवस्था के अनुसार न्यून से न्यून आधे अन्तरंग सभा के सदस्यों के हस्ताक्षरों से कोई अविश्वास प्रस्ताव सम्मिलित किया जाना आवश्यक है। डॉ० भानु प्रकाश आर्य-प्रतिष्ठित सदस्य, आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ द्वारा संस्था के 50 (पचास) पदाधिकारियों/प्रतिष्ठित/सहयुक्त/अन्तरंग सदस्यों के दर्शाये गये हस्ताक्षरित पत्र दिनांक-14-10-2017 मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के नाम से संस्था कार्यालय में दिनांक-16-10-2017 को प्राप्त कराया गया।

आज दिनांक-05-11-2017 को संस्था की वर्तमान अन्तरंग सभा (प्रबन्ध समिति) की सूची वर्ष-2017-18 से डॉ० भानु प्रकाश आर्य द्वारा प्रस्तुत अविश्वास नोटिस दिनांक-16-10-2017 का मिलान किया गया, जिसमें सर्वश्री पंकज जायसवाल-उप मन्त्री, डॉ० कल्पना सागर-सहयुक्त सदस्य, श्रीमती गायत्री दीक्षित-उप प्रधान, विजयपाल सिंह आर्य-अन्तरंग सदस्य, अलीगढ़, दिपेन्द्र कुमार आर्य-अन्तरंग सदस्य सम्मल, राज कुमार चौहान-अन्तरंग सदस्य-हरिद्वार, राजकुमार पाल-अन्तरंग सदस्य-प्रतापगढ़ का नाम अंकित नहीं है तथा श्री लोकेन्द्रदेव आर्य-अन्तरंग सदस्य कासगंज न तो सूची वर्ष-2016-17 में अंकित था और न ही वर्तमान सूची में है। सदस्य पद आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ की नियमावली के नियम-2 उ. ख-1 व 2, 10 (8) एवं मा० उच्च न्यायालय के आदेशों के अन्तर्गत स्वतः रिक्त हो चुके थे। अतः उक्त 08 (आठ) पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों के हस्ताक्षर मान्य नहीं हैं। अविश्वास नोटिस हेतु वैधानिक 43 सदस्यों के हस्ताक्षर अनिवार्य रूप से होने आवश्यक हैं, जो पूर्ण नहीं हैं।

उपरोक्त पदों पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ की नियमावली के नियम-58 के अन्तर्गत रिक्तियों के स्थान पर नवीन पदाधिकारियों की पूर्ति भी की जा चुकी है।

संस्था की नियमावली के नियम-10 (7) के अनुसार उपरोक्त अविश्वास नोटिस का कोरम पूर्ण न होने के कारण आगामी अन्तरंग सभा की बैठकों में उक्त नोटिस को एजेण्डा के विषय में जोड़ने का कोई औचित्य नहीं रह गया है। सूचनार्थ प्रेषित।

भवदीय,
(स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती)
सभा मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा

उत्तर प्रदेश

(स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती)
मन्त्रीआर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश

संख्या एवं दिनांक तदैव।

प्रतिलिपि श्रीमान् डिप्टी रजिस्ट्रार, फर्म्स सोसाईटीज एवं चिट्स, लखनऊ, 22-स्टेशन रोड, तृतीय तल, लखनऊ को सूचनार्थ प्रेषित।

प्रेरक प्रसंग-

अपूरणीय क्षति

सन्त तिरुवल्लुगर आरम्भिक जीवन में जुलाहे थे। साड़ी या जरूरी कपड़ों की एक छोटी-सी दुकान करते थे। एक बार कुछ शरारती लड़के उनकी दुकान पर आ सौदेबाजी करने लगे। उनमें से एक धनी लड़के ने एक साड़ी को उठा कर पूछा, "क्या मूल्य है इसका?" "दो रुपये।"

शरारती लड़के ने साड़ी फाड़ कर उसके दो टुकड़े कर दिये और फिर पूछा, "अब क्या मूल्य है इसका?"

"एक-एक भाग का एक-एक रुपया।"

लड़का शरारती था और उनको चिढ़ाने के उद्देश्य से ही दुकान पर वे लोग आये थे। लड़का उस साड़ी के टुकड़े करता रहा और हर बार उनका मूल्य भी पूछता रहा। सन्त उसी हिसाब से उसको मूल्य बताते रहे।

जब साड़ी के टुकड़े-टुकड़े हो गये तो वह लड़का बोला, "मैं इस साड़ी को नहीं खरीदूंगा। ये टुकड़े मेरे किस काम के?"

सन्त बोले, "ये तुम्हारे क्या, किसी के भी काम नहीं आयेंगे।"

यह सुनकर लड़के को कुछ लज्जा सी आयी। अन्त में उसने कहा, "ठीक है, ये दो रुपये लो, इससे आपका घाटा पूरा हो जाएगा।" उसने रुपये देने चाहे, किन्तु सन्त ने वे रुपये नहीं लिए।

सन्त बोले, "घाटा तो तुम क्या कोई भी पूरा नहीं कर सकता। किसानों के परिश्रम के कपास पैदा हुई, जिसकी रूई से मेरी पत्नी ने सूत काता, उसको मैंने रंगा और फिर उसकी साड़ी बुनी।"

"घाटा तो तब पूरा होता जब कोई इसको पहनता। कितने लोगों का परिश्रम व्यर्थ गया। क्या कोई रुपये से इस घाटे को पूरा कर सकता है?"

तिरुवल्लुगर ने यह सारी बात बड़े शान्त चित्त से कही थी, किसी आवेश में आकर या डाँटने के भाव से नहीं। मानो कोई पिता अपने पुत्र को समझा रहा हो। शरारती लड़का यह सब सुन कर लज्जा से पानी-पानी हो गया। उसकी आँखें भर आयीं। सहसा वह तिरुवल्लुगर के चरणों में गिर पड़ा। उसने उनसे बार-बार क्षमा-याचना की।

तिरुवल्लुगर तो सन्त थे, उन्हें उस पर जब क्रोध ही नहीं था तो फिर क्षमा क्या करते। लड़के चुपचाप चले गये।

घरेलू औषधियां-

छाछ है महा वरदान

रोज सुबह एक ग्लास ताजा छाछ पीना अमृत सेवन के समान है। इससे चेहरा चमकने लगता है। खाने के साथ छाछ पीने से जोड़ों के दर्द से भी राहत मिलती है। छाछ कैल्शियम से भरी होती होती है। इसका रोजाना सेवन करने वाले को कभी भी पाचन संबंधी समस्याएं प्रभावित नहीं करती हैं। खाना खाने के बाद पेट भारी हो जाना अरुचि आदि दूर करने के लिए गर्मियों में छाछ जरूर पीना चाहिए।

एसिडिटी-गर्मी के कारण अगर दस्त हो रहे हों तो बरगद की जटा को पीसकर और छानकर छाछ में मिलाकर पिएं। छाछ में मिश्री, काली मिर्च और सेंधा नमक मिलाकर रोजाना पीने से एसिडिटी जड़ से साफ हो जाती है।

रोग प्रतिरोधक बढ़ाए-हसमें हेल्दी बैक्टीरिया और कार्बोहाइड्रेट्स होते हैं साथ ही लैक्टोस शरीर में आपकी रोगप्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है, जिससे आप तुरन्त ऊर्जावान हो जाते हैं।

कब्ज-अगर कब्ज की शिकायत बनी रहती हो तो अजवाइन मिलाकर छाछ पिएं। पेट की सफाई के लिए

गर्मियों में पुदीना मिलाकर लस्सी बनाकर पिएं।

खाना न पचने की शिकायत-जिन लोगों को खाना ठीक से पचने की शिकायत होती है उन्हें रोजाना छाछ में भुने जीरे का चूर्ण, कालीमिर्च का चूर्ण और सेंधा नमक का चूर्ण समान मात्रा में मिलाकर धीरे-धीरे पीना चाहिए। इससे पाचक अग्नि तेज हो जाएगी।

विटामिन-बटर मिल्क में विटामिन सी, ए, ई, के और बी पाये जाते हैं, जो कि शरीर के पोषण की जरूरत को पूरा करते हैं।

मिनरल्स-यह स्वस्थ पोषक तत्वों जैसे लोहा, जस्ता, फास्फोरस और पोटेशियम से भरा होता है, जो कि शरीर के लिए बहुत ही जरूरी मिनरल माने जाते हैं।

- यदि आप डाइट पर हैं तो रोज एक गिलास छाछ पीना ना भूलें। यह लो-कैलोरी और फैट में कम होता है।

- हिचकी लगने पर छाछ में एक चम्मच सोंठ डालकर सेवन करें।

- उल्टी होने पर छाछ के साथ जायफल घिसकर चाटें।

- गर्मी में रोजाना दो समय पतला छाछ लेकर उसमें भुना जीरा मिलाकर पीने से गर्मी से राहत मिलती है।
- मूले में आटा मिलाकर लेप करने से झुर्रियां कम पड़ती हैं।
- पैर की एड़ियों के फटने पर छाछ का ताजा मक्खन लगाने से आराम मिलता है।
- सिर के बाल झड़ने पर बासी छाछ से सप्ताह में दो दिन बालों को धोना चाहिए।
- मोटापा अधिक होने पर छाछ को छौंककर सेंधा नमक डालकर पीना चाहिए।
- सुबह-शाम छाछ या दही की पतली लस्सी पीने से स्मरण शक्ति तेज होती है।
- उच्च रक्तचाप होने पर गिलोय का चूर्ण मूले के साथ लेना चाहिए।
- कहा जाता है किसी ने जहर खा लिया हो तो उसे बार-बार फीका मूला पिलाना चाहिए। परन्तु डॉक्टर की सलाह अवश्य लें।
- अमलतास के पत्ते छाछ में पीस लें और शरीर पर मलें। कुछ देर बाद स्नान करें। शरीर की खुजली नष्ट हो जाती है।

पृष्ठ १ का शेष

पूरे प्रदेश में शराब बन्दी की माँग ...

शराब का सेवन किया जाता है इसलिये वह किसी विवाह में नहीं जाते और मुख्यमंत्री बनने के बाद नहीं गये हैं। उन्होंने कहा कि हरयाणा राज्य में शराब बन्दी की गई थी तो वहां कि महिलाओं ने ही शराब बन्दी के विरोध में प्रदर्शन कर कहा था कि पहले तो उनके घरवाले रात्रि को घर पर आ भी जाते थे, परन्तु अब वह नहीं आते। उन्होंने बिहार राज्य में जहरीली शराब से हुई मौतों पर भी दुःख जताया। उन्होंने आर्यसमाज से कहा कि वह शराब के विरोध में प्रचार करें और लोगों में जागृति उत्पन्न करें जिससे लोग शराब न पियें। मुख्यमंत्री जी ने आर्यसमाज के कार्यों की प्रशंसा की और प्रतिनिधि मण्डल के सदस्यों से मिलने पर भी अपनी प्रसन्नता व्यक्त की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने अभिनन्दन एवं स्वागत भाषण में कहा मुख्यमंत्री जी का सहृदयतापूर्वक आर्यसमाज का आमंत्रण स्वीकार करने के लिए धन्यवाद है। उन्होंने कहा कि विगत दिनों उत्तराखण्ड के रुद्रपुर में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरखण्ड की बैठक में भवाली आर्यसमाज की लीज की समस्या पर विचार किया गया था। वहां यह निर्णय किया गया था कि मुख्यमंत्री जी से भेंट कर इसका निदान करने के लिए निवेदन करेंगे। विधान सभा चौक का नाम महर्षि दयानन्द चौक करने के संबंध में स्वामी आर्यवेश जी ने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द जी का सन् १८५७ की प्रथम क्रान्ति व स्वतन्त्रता संग्राम में भी सक्रिय योगदान था और वह इस क्रान्ति के प्रायः सभी सूत्रधारों से मिले थे व उन्हें इसकी प्रेरणा की थी। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा विधान सभा चौक का नाम उनके नाम पर करने से यह उनके प्रति श्रद्धांजलि होगी। स्वामी जी ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का भी स्मरण करते हुए कहा कि उन्होंने कुछ दिन पूर्व युवा पीढ़ी को नशे से बचाने की बात कही है। उन्होंने कहा कि शराब बन्दी किये बिना देश उन्नति नहीं कर सकता। स्वामी जी ने कहा कि पहाड़ के लोग नशे से होने वाली हानियों के शिकार हैं। परिवार में एक व्यक्ति द्वारा नशा करने से पूरा परिवार पीड़ित होता है वह दुःखी रहता है। उन्होंने पुरानी सरकार के समय में यूएनओ की एक टिप्पणी की चर्चा की और कहा कि शराब की खुली बिक्री के चलते देश का विकास नहीं हो सकता। अपने वक्तव्य को विराम देते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने मुख्यमंत्री जी को यशस्वी होने का आशीर्वाद दिया और कहा कि उनके शासनकाल में देवभूमि उन्नति को प्राप्त हो और सारा देश इस देवभूमि को नमन करे। स्वामी जी के वक्तव्य के अन्त के शब्द थे कि सार्वदेशिक सभा की ओर से माननीय मुख्य मंत्री जी का अभिनन्दन एवं धन्यवाद।

आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ० धीरज सिंह ने अपने सम्बोधन में मुख्यमंत्री जी को आर्यसमाज का विस्तृत परिचय दिया। उन्होंने कहा कि देश के सभी सुधीजन आर्यसमाज की विचार धारा धर्म, देश और समाज के हितकारी कार्यों से परिचित हैं। उन्होंने आशा व्यक्त किया आर्यसमाज की सभी मांगों को मुख्यमंत्री जी स्वीकार कर लेंगे। नशे की चर्चा कर उन्होंने प्रतिनिधि मण्डल के सभी सदस्यों को बताया कि मुख्यमंत्री जी नशे के जबरदस्त खिलाफ हैं। श्री पुष्कर जी ने कहा कि देश व समाज के हितकारी कार्यों में आर्यसमाज की भूमिका महत्वपूर्ण है। उन्होंने प्रधानमंत्री जी द्वारा चलाये जा रहे स्वच्छता अभियान को आर्यसमाज का ही कार्यक्रम बताया और प्रधानमंत्री जी की प्रशंसा की। उन्होंने भी आशा व्यक्त की मुख्यमंत्री आर्यसमाज की सभी मांगों को स्वीकार कर लेंगे। मुख्यमंत्री जी से शिष्टाचार भेंट में डॉ० वेदप्रकाश गुप्ता, श्री प्रेम प्रकाश शर्मा आदि ने भी संक्षिप्त विचार व्यक्त किये।

लगभग एक घंटा चली बैठक में प्रदेश के अनेक स्थानों से ४० से अधिक प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। मुख्यमंत्री जी की ओर से सबको जलपान कराया गया। बैठक में अन्य उपस्थित महत्वपूर्ण लोगों में विधायक स्वामी यतीश्वरानन्द जी डॉ० धनंजय आर्य गुरुकुल पौधा, आचार्य भूषण जी, श्री सुमन्तसिंह आर्य, श्री हाकिमसिंह जी, पुरोहित रणजीत सिंह जी, वीरेन्द्र पवार, श्री नवीन चन्द्र आर्य, श्री ज्ञानचन्द गुप्ता व उनके सहयोगी, सभा मंत्री श्री दिनेश कुमार, श्री मानवीर सिंह, डॉ० वेदप्रकाश गुप्ता जी और अनेक महिला सदस्य आदि उपस्थित रहे। सभा बहुत सुखद वातावरण में सम्पन्न हुई।

काशी में चतुर्थ दिवसीय काशी शास्त्रार्थ स्मृति

जिला आर्य प्रतिनिधि वाराणसी एवं आर्य समाज आनन्द बाग में संयुक्त तत्वावधान में १६, ३०, ३१ अक्टूबर २०१७ को काशी शास्त्रार्थ स्मृति महोत्सव के रूप में सम्पन्न हुआ कार्यक्रम में वैदिक विद्वान् आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय दिल्ली, सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती लखनऊ आर्य तपस्वी, कैलाश कर्मठ, हरिश्चन्द्र आर्य, दीन दयाल आर्य अध्यक्ष बंगाल प्रतिनिधि सभा के अतिरिक्त क्षेत्रीय सांसद विधायक एवं समाज सेवी नेताओं ने भाग लेकर आर्य जनता को उद्बोधन दिया। प्रमोद आर्य मंत्री ने संयोजन किया तथा बेचन सिंह आर्य रमाशंकर आर्य, बुद्धदेव आर्य, दिनेश आर्य, अशोक त्रिपाठी, सतेन्द्र सिंह आर्य, विजय आर्य, रवि आर्य के साथ-साथ क्षेत्र के आर्य भारी संख्या में उपस्थिति हुए। १५० वें कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई। स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने एवं व्यासनन्दन शास्त्री मंत्री बिहार प्रतिनिधि सभा ने सभी को उत्साहित किया।

धूमधाम से सम्पन्न ६०वां वार्षिकोत्सव

श्री मददयानन्द गुरुकुल संस्कृत विद्यालय गंगीरी-अलीगढ़ का ६०वां वार्षिकोत्सव धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। इसमें आर्य समाज को लोगों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

इस आशय की जानकारी प्रधान आचार्य तेज प्रकाश आर्य ने दी है। इन्होंने बताया कि तीन दिवसीय महोत्सव की शुरुवात १ से होकर ३ अक्टूबर को खत्म हुआ। कार्यक्रम में प्रातः काल यज्ञ एवं वेद प्रवचन व भजन और प्रवचन हुआ। समारोह में प्रमुख रूप से आचार्य मित्र सेन आर्य, पीताम्बर दत्त शास्त्री, वैद्य राजेन्द्र कुमार शर्मा, विद्याधर आर्य शास्त्री, स्वामी उद्गीद्यानन्द सरस्वती, केसी शर्मा, गंगा दयाल आर्य, कुलदीप आर्य, लाखन सिंह आर्य, मुन्नु लाल राजपूत, उमेशा चन्द्र आर्य, वैद्य रामचरन लाल, चंद पाल आर्य उपस्थित रहे।

आर्य समाज बुढ़ाना का वार्षिकोत्सव एवं जिला मु० नगर, उपप्रतिनिधि सभा का कार्यकर्ता सम्मेलन सम्पन्न

आर्य समाज बुढ़ाना, एवं उपप्रतिनिधि सभा मुजफ्फर नगर का कार्यकर्ता सम्मेलन दिनांक २५ अक्टूबर से २८ अक्टूबर तक बड़े हर्षोल्लास के साथ-साथ मनाया गया आर्य समाज बुढ़ाना के सभी सम्बन्धित विद्यालयों ने कार्यक्रम में भाग लिया यज्ञ के ब्रह्म आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक व भजनोपदेशक श्री कुलदीप आर्य, के भजनों एवं योगेन्द्र याज्ञिक जी के प्रवचनों आर्यजनों का मार्ग दर्शन किया। वेद पाठी आचार्य श्रुति के द्वारा शास्त्री एवं आचार्या स्मृति शास्त्री जी द्वारा वेद पाठ ने यज्ञ में भाग ले रहे यज्ञमानो को गुरुकुलीय वातावरण का अनुभव कराया।

आर्य कन्या इन्टर कालेज, डी०ए०वी० इण्टर कालेज, एवं ड०ए०वी० डीग्री कालेज, डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल बुढ़ाना के सभी विद्यालयों के अध्यापकगण व कर्मचारीगण, प्रबन्धक अधिकारी सभी उपस्थित रहे। राजीव कुमार, अरुण त्यागी, पुनीत कुमार, अरुण कुमार त्यागी, सुनी कुमार, रेखा त्यागी, संगीता चौ०, धर्म सिंह, अनीता रानी, भावना आर्या, अमित कुमार आर्य, राजेन्द्र कुमार, तेजपाल सिंह, सूरज सिंह आदि आर्य महानुभाव उपस्थित रहे कार्यक्रम समापन में अपना उद्बोधन करते हुए आर्य सामज बुढ़ाना के मंत्री श्री अरविन्द कुमार जी ने सबका आभार व्यक्त किया। शान्ति पाठ और वैदिक उद्घोष के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

शोक संवेदना

आर्य समाज सांन्ताक्रूज के पुरोहित पं० नचिकेता शास्त्री का आकस्मिक निधन दिनांक ०१.११.२०१७ को हो गया। पं० नचिकेता शास्त्री पिछले काफी समय से अस्वस्थ चल रहे थे। अपने पीछे एक भरा परिवार छोड़कर गये असमय मृत्यु परिवार के लिए बहुत ही दुःख का विषय है।

आर्य मित्र परिवार हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि शोक संतिप्त परिवार को यह असहनीय दुःख सहन करने की क्षमता प्रदान करें, और दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सदगति प्रदान करें।


आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्स: ०५२२-२२६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४९, मंत्री- ०६८३७४०२९६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

मा० मुख्यमंत्री उ०ख० से भेंट एवं स्वागत करते हुए, विभिन्न आर्य समाजों के कार्यक्रम



उ०ख० मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत जी से भेंट करते हुए सभा प्रधान डॉ० धीरज सिंह जी एवं सार्वदेशिक सभा के प्रधान आर्यवेश जी एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के प्रधान गोविन्द सिंह भण्डारी जी, नशाबन्दी हेतु ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए



वाराणसी काशी शास्त्रार्थ स्मृति महोत्सव में सभामन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी उद्बोधन करते हुए एवं कन्याकुरुकुल की ब्रह्मचारिणियां वेदपाठ करते हुए एक दृश्य



आर्यसमाज बुढ़ाना, मु० नगर, यज्ञ महोत्सव में यज्ञ करते हुए कोषाध्यक्ष अरविन्द कुमार जी



आर्य समाज बुढ़ाना, मुजफ्फर नगर, यज्ञ महोत्सव की झलकियां

अन्तरंगाधिवेशन की सूचना

सभी पदाधिकारियों, प्रतिष्ठित, सहयुक्त, अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जाता है, कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, (नारायण स्वामी भवन), ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ की आगामी अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक 12 नवम्बर, 2017 रविवार तदनु माघ कृष्ण नवमी को प्रातः 11.00 बजे से संस्था प्रधान/का० प्रधान-डॉ० धीरज सिंह की अध्यक्षता में आर्य समाज जसवन्तनगर, इटावा में सम्पन्न होगी, आपकी उपस्थिति अतिआवश्यक एवं प्रार्थनीय है। विषयवार एजेण्डा आपके पते पर रजिस्टर्ड डाक द्वारा प्रेषित किया जा चुका है।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

सभा मंत्री

मो० : ०६८३७४०२९६२

नोट: आर्य समाज नया शहर इटावा, एवं आर्यसमाज जसवंत नगर इटावा, में ठहरने एवं जलपान की व्यवस्था की गयी है।

सम्पर्क सूत्र : ६४१२७४४३४९, ०६८३७४०२९६२

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक - मुद्रक -प्रकाशक -श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।